RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

समाज कें विकास में रामकथा

डॉ. गीता सहाय

हिन्दी विभाग गया कालेज,गया

मित्रों में अपनी बात महात्मा गाँधी के इस कथन से शुरू करना चाहती हूँ कि–

''जो मनुष्य यह कहता है कि धर्म का राजनीति से कोई संबंध नही है, वह धर्म को नही जानता, ऐसा कहने में मुझे कोई संकोच नही होता और न ही ऐसा कहने में मैं अविनय करता हूँ।'' 1

वास्तव में भारतीय चिन्तन परंपरा पर जब हम गहरी दृष्टि डालते हैं तो पाते है कि श्धर्मश पूरे भारतीय जीवन द नि में न केवल समाहित स्वीकृत है बल्कि हमारे चार पुरूशार्थों में सिरस्थ भी है। हमारे यहाँ धर्म का कोई एक आ गय अर्थ परिभाशा भी सर्वमान्य नही यह तो कर्तव्य अधिकार एवं गुणधर्म के साथ प्रयोग में लाई जाने वाली भाक्ति के रूप में चिन्हीत किया गया था। अर्थात व्यवस्था में जो नियम है वही धर्म है। किंतु अतीत पर दृश्टि डालने पर हम पाते है कि जब मुगलों एवं अन्य बाह्य आक्रमणकारियों का इस दे में आगमन हुआ वे अपने साथ–साथ अपने मजहब और रिलीजन भी लेकर आये और उनके प्रचार–प्रसार को भी अपने एजेंड में रखा गया यही से देखा जाए जो मजहब रिलीजन के समांतर धर्म का प्रयोग भी किया जाना दिखाई देने लगता है। एक निचित विचारधारा के साथ जोड़ें जाने के भी प्रयासों को नजर अंदाज नही किया जा सकता है। नतीजा यह है कि आज धर्म को भी 'मजहब' या रिलीजन के समानार्थी ही स्वीकार किया जा चुका है।

अपनी बात को और पुश्ट करने हुए श्री भगवान सिंह के भाब्दों में कहे तो सच कहे तो 'धर्म' के साथ आधुनिकता न जैसा दुर्व्यवहार किया है, वैसे भारतीय द नि से जुड़े किसी भाब्द के साथ नहीं किया। इस्लाम के साथ 'मजहब' भाब्द का और 'ईसाइयत' के साथ 'रिलीजन' भाब्द का यहाँ आगमन हुआ, तो धर्म का प्रयोग इन दोनों के पर्यायवाची के रूप में किया जाने लगा, बिना यह सोचे समझे कि धर्म का स्वरूप– वही नही है जो 'मजहब' या रिलीजन का है। सर्वविदित है कि इस्लामी मजहब के अन्तर्गत खुदा, पैगम्बर हजरत मुहम्मद और कुरान– रीफ में अडिग आस्था का होना अनिवार्य भार्त है। उसी तरह ईसाई रिलीजन में ईश्वर, ईसा मसीह एवं श्बाइबिलश में आस्था होना उसका मूलाधार है यानि मजहब और रिलीजन दोनों ही एक खास मत–प्रर्वतक एक खास धर्मग्रंथ तथा ईश्वर की सत्ता को अपनी बुनियाद के रूप में स्वीकार कर चलते हैं। इसके विपरीत भारतीय जीवन द नि में प्रयुक्त धर्म का न कोई व्यक्ति विशेष प्रतिपादक है, न बाइबिल 'कुरान' की तरह उसका एक ग्रंथ है, यहाँ तक कि ईश्वर की सत्ताा को स्वीकार करना भी आव यक नही है। बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की बात करें, तो ये धर्म शुरू से ही अनी वरवादी रहे। आज जिसे हिन्दु धर्म कहा जाता है, उसका न बाइबिल या कुरान की तरह कोई एक धर्म ग्रंथ है न ईसा मसीह या हजरत मुहम्मद की तरह एक व्यक्ति –वि श उसका प्रवर्तक है। यही नहीं, ऐसी कोई एक निचित, बंधी–बंधाई उपासना पद्धति भी नही है जिसका अनुगमन करना हिन्दु धर्मावलम्बियों के लिए अनिवार्य हो। यहाँ पूरी छूट है कि कोई ब्रम्ह या ई वर को निराकार, अव्यय माने या साकार व्यक्ति माने । कोई काली दुर्गा को भक्ति स्वरूप मानकर उपासना करते हुए पशु बलि में विश्वास करता है तो कोई वैश्ठाव मत को महत्व देते हुए अहिंसात्मक उपासना पद्धति को श्रेयस्कर मानता है कोई अपने कर्म को ही धर्म मानता है, तो कोई परमार्थ को। 2

स्पश्ट कहे तो हमारे यहाँ धर्म जीवन से जीवन के लिए जीवन द्वारा संचारित होने वाली अत्यन्त गहरी गूढ सतत निरंतर प्रवाहमान प्रक्रिया है जिसकी अभिव्यक्ति किसी एक सूत्र पुस्तक या पैगम्बर के सहारे नही की जा सकती। श्री भगवान सिंह न अपनी पुस्तक तुलसी और गाँधी में धर्म की सर्वोपरित वाले आलेख में पं. चन्द्रधर भार्मा गुलरी का जो धर्म सम्बंधी यह विवेचना, जो उनके निबंध 'धर्म और समाज का एक अं । है, ध्यान देने योग्य है, हम यहाँ पर कह देना चाहते है कि मत या समुदाय के अर्थ में धर्म भाब्द का प्रयोग करना भी हमने अधिकतर विदेशियों से ही सीखा है, जब विदेश । भाषाओं में 'मजहब', 'रिलीजन भाब्द यहाँ प्रचलित हुए, तब भूल से या स्पर्धा से उनके स्थान में धर्म भाब्द का प्रयोग करने लगें परंतु हमारे प्रचीन ग्रंथों में, जो विदे यों के आने से पूर्व रचे गये थे कही पर भी 'धर्म' भाब्द मत, वि वास या समुदाय के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ, प्रयुक्त उनमें सर्वत्र स्वभाव और कर्तव्य, इन दो ही अर्थों में इसका प्रयोग पाया जाता है। प्रत्येक पदार्थ में उसकी जो सत्ता है, जिसको श्वभाव भी कहते हैं, वही उसका धर्म है। जैसे वृक्ष का धर्म 'जड़ता और प पु का धर्म प गुता कहलती है। ऐसे ही मनुष्य का धर्म मनुष्यता है। वह मनुष्यता किस वस्तु पर अवलम्बित है? इसमें किसी का मतभेद नहीं हो सकता कि मनुश्यता का आधार बुद्धि है। बुद्धि की दो भाखाएँ हैं– एक कल्पना भाक्ति, दूसरी विचार भाक्ति । कल्पना भाक्ति संदेहात्मक है और विचार भाक्ति निर्णयात्मक। बिना सन्देह के किसी बात का निर्णत नहीं हो सकता। अतएव अपनी कल्पना भाक्ति से सन्देह उठा कर पुनः विचार शंत्ति से उसका निर्णय करने में जो समर्थ है, वही मनुष्य है। संसार में सिवाय असम्भव और वन्य जीवनके लोगों के और कौन ऐसा मनुष्य होगा, जिसको ऐसे धर्म की आवश्यकता न होगी जो उसको मनुष्य बनाता है। यह तो हुआ सामान्य धर्म, अब रहा विशेष धर्म, इसी का दूसरा नाम कर्त्तव्य भी है। यदि राजा राजधर्म का प्रजा प्रजा धर्म का, स्वामी प्रभुधर्म को सेवक सेवा धर्म कर्म पिता पितृधर्म का पुत्र पुत्रधर्म का पति पतिधर्म का स्त्री स्त्रीधर्म का गृहस्थ गृहस्थधर्म का और यति यतिधर्म का साधन न करें तो फिर संसार में न होई मर्यादा रहे, न व्यवस्था। संसार में भाांति और व्यवस्था तभी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रही सकती है, जब प्रत्येक मनुष्य कर्त्तव्य के अनुरोध से अपने–अपने धर्म का पालन करें। अतएव इसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं कि धर्म ही संसार की प्रतिष्ठा का कारण है।

या धिय त दधाति वा ५)म•

जो धारण किया हुआ प्रत्येक पदार्थ को धारण करता है वह धर्म है। अग्नि में यदि उसका धर्म तेज न रहे, फिर कोई उसे श्अग्निश कही कहता, ऐसे ही मनुष्य यदि अपना धर्म त्याग दे तो फिर केवल आकृत और बनाकर उसकी मनुश्यता की रक्षा नहीं कर सकती। क्योंकि मनुष्य के लिए प्रत्येक द ॥ में अपने कर्तव्य का पालन करना ही सर्वोपरी धर्म है..... .....जब मनुष्य के आचार या कर्तव्य का नाम धर्म है, तब यदि हमारे पूजनीय पूर्वजों ने उसकी मनुष्य की प्रत्येक द ॥ से (चाहे वह आत्मिक हो या सामाजिक या वैयक्तिक) सम्बधं किया तो इससे उनका यह अभिप्राय कदापि नहीं हो सकता था कि उन्होंने हमको मतवाद के जाल में फंसाने के लिए धर्म की टट्टी खड़ी की। उन्होंने तो हमारे मनुश्यत्व की रक्षा के लिए ही प्रत्येक कार्य में इसका आयोजन किया था।''[3]

निबंधों की दुनिया–५ चन्द्रधर भामा गुलेरी, प्रधान संपादक

डॉ. निर्मला जैन पृष्ठ सं. 59–61 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. संस्करण – 2007

धर्म के संबंध में अपनी अवधारणा को स्पश्ट करने के प चात मैं विशय के प्रथम सोपान पर आना चाहती हूँ कि समाज में विकास की संभावनाओं की नब्ज टटोलने से पूर्व हमें अपने समय को अपने समय की चुनौतियों एवं समय के वैयक्तिक परिदृ य को बहुस्तरीय आयामों पर देखना परखना समझना होगा क्योंकि समय की पहचान और चुनौतियों के बरढस ही नायकत्व की निर्मित होती है। 7 अक्टूबर 2015 को अपने वक्तव्य में तत्कालीन राश्ट्रपति प्रणवमुखर्जी का यह कथन अकारण नहीं कि भारत अपने उन मूल तत्वों से भटके नही जिनके बल पर भारत ने अपने को सुरक्षित रखा और इतनी लम्बी यात्रा तय की। एक ओर इतिहास के पुनर्लेखन की संभावनाये व्यक्त की जा रही है तो दूसरी ओर इसका पूरजोर विरोध करते हुए उसे राष्ट्रवाद का जामा पहनाये जाने की बाते की जा रही है।

निः संदेह इक्कीसवी सदी के वर्तमान समय में वैयक्तिक धरातल पर हम भूमण्डलीकरण के गहरे गिरफ्त में है। भूमण्डलीकरण के समस्त अवयव नव–उदाहरण या उदारीकरण, निजीकरण, विनिवे करण, उच्च उपयोक्ता करण आदि के प्रभावों से वि व का कोई भी दे । अछूता नहीं रह गया है। दे । के लगभग समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मूलभूत परिवर्तन तेजी से दृश्टिगोचर हो रहे हैं। व्यक्तिगत जीवन जीवन मूल्य, जीवन भौली में निरंतर गिरावट के साथ परिर्वतन जारी है यह परिर्वतन राश्ट्रीय जीवन स्तर पर धर्म समाज संस्कृति अर्थव्यवस्था राजनीति तकनीकि आदि सभी क्षेत्रों में कमोवे अपने पाव पसार रही है एक ओर हम सूचनाओं के ढेर पर खड़े ग्लोबल विलेज की घोशणा कर आंतरीक्ष विजय का उद्घोश करने को उतावले हुए जा रहे है तो वही दूसरी ओर मध्ययुगीन आक्रमकता के साथ धार्मिक कट्टरता अपने पाव पसारती दिख रही है, धर्मयुद्धों के बदले स्वरूप ने वैयक्तिक स्तर पर अलग–अलग अपने त्रिकोंणों का निर्माण कर रखा है जिससे आज कोई भी दे । अछूता नही है। ये चुनौतियाँ जितनी आंतरिक है, उतनी बाह्य भी है। विडंबना यह है कि जिन वैयक्तिक भाक्तियों के समक्ष सभी समस्याओं के माध्यम हेतु उम्मीद लगाये बैठे हैं, संघर्शों के सूत्रधार भी वही आस–पास ही है।

वर्तमान समय के वैयक्तिक परिदृ य पर गहरी दृश्टि डालने पर यह स्पश्ट होने लगता है कि पिछले दो तीन दशकों में भूमण्डलीकरण के बढ़ते प्रभवों के साथ उसी गति से कुछ और भी बढ़ा है तो वह है धार्मिक आकामकता। आज श्धर्मश–शरिलीजनश –श्मजहबश वि व राजनीति के केन्द्र में है। 21 वी सदी में धर्म की उपयोगिता व सार्थकता को लेकर विम चिल रहे हैं। वर्तमान समय की विसंगति यह है कि एक तरफ तो हम उत्तर आधुनिक उत्तर औद्योगिक सभ्यता के पायदान पर चढ़ते जा रहे हैं तो दूसरी ओर जन संवेदन में हमारा कद दिन–प्रतिदिन घटता जा रहा है। इस लोकतंत्र और राज्य अंततः किसके लिए है? प्र न यह भी कि वर्तमान व्यवस्था का विकल्प क्या है? आज दे । जिन व्यवस्थागत दोशों, के मकड़जाल में उलझा है जिनमें भ्रश्टाचार परिवारवाद बाजार वाद बहुराष्ट्रीय निगम पूँजीवाद एकाधिकारवाद आदि आदि वेहद संवेदन लि विशय है? इससे उसे कैसे मुक्ति मिले ? तो हम कह सकते है कि न्यायपूर्ण विशमतामुक्त समाज की संरचना ही मनुष्य का स्वप्न है। रामायण काल हो अथवा महाभारत काल चेतना सम्पन्न मनुष्य अपने निजी दुख,संताप भोक अन्याय जैसी परिस्थितियों से अनादि काल से संघर्शरत है। अन्याय जैसी परिस्थितियों से अनादि काल से संघर्शरत है। इसी क्रम में राम, कृश्ण, महावीर, बुद्ध, ईसा, मोहम्मद मार्क्स लेनिन गाँधी जैसे महानायकों का अपना दाय भी अक्षुश्ण है। इन्होंने धर्म, त्याग, करूणा, दया, स्वतंत्रता समानता अहिंसा न्याय सहिश्णुता आदि को ही हथियार (अस्त्र) बनाकर अपने–अपने समय की परिस्थितियों पर न केवल विजय प्राप्त किया बल्कि व्यवस्था परिवर्तन में भी प्रभाव पाली भूमिकाओं का निर्वहन किया, किन्तु आधुनिक समय में विशमता मुक्त समतायुक्त समाज का स्वप्न खण्डित अनुत्तरित ही है। इस पर हमारे समय के वरिश्ठ पत्रकार समाज विज्ञानी राम रण जो के विचारों को देखते चलते है– ''वास्तव में, धर्म की सत्ता का रहना राजनीति की सीमाओं व विफलताओं की अव य उजागर करता है। ऐतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक राजनीति धर्म की सत्ता को प्रतिस्थापित क्यों नहीं कर सकी? इस प्र न का एक उत्तर यह ही सकता है कि राजनीति और राजनीतिज्ञ मानवता को ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था देने में नाकाम रहे हैं जो धर्म से अधिक उजली, निर्मल, संवेदन ल मानवीय, विशमतायुक्त और समावे ही हो।''[3]

विशय के तीसरे पक्ष पर आते है और आज के समय में समाज में विकास की संभावनाओं में रामकथा एवं कृश्ण कथा से जीवन दृष्टि ग्रहण करते है– भारतीय संस्कृति और दर्शन में धर्म की जो और जितनी भी अवधारणयें रही है उनमें सभी के लिए परस्पर स्थान सौहार्द सहयोग अवसर अवका । रहा है। बहस की पूरी गुंजाइ – यहाँ– वादे वादे जायते तत्व बोधः– चर्चा से ही हम सच्चाई तक पहुँच सकते है।

रामकथा पर बात शुरू करते है 20वी सदी के महानायक महात्मा गाँधी के जीवन के केन्द्र में जो भारतीय चिन्तन था वह तुलसी का 'नानापुराणनिगमागम' से होकर ही गाँधी तक पहुँचा था। प्रो. गोपे वर सिंह ने अपनी चर्चित आलोचनात्मक पुस्तक भक्ति आंदोलन और काव्य में लेख तुलसीदास स. अझेल हमलों के बीच में स्पश्ट स्वीकारते है कि

महात्मा गाँधी के प्रिय ग्रंथों में रामचरित मानस भी था। स्वतंत्रता संग्राम और जीवन संग्राम की लम्बी और बहुआयामी लड़ाई लड़ते हुए मानस उनका बड़ा सम्बल रहा रामराज्य की अवधारणा उन्हें से ही मिली...... यह उनके निर्गुण सुराज का ही सगुण संस्करण था, जिसमें सभी धर्मों –जातियों के लिए समानता का यूरापिया था। बाबा रामचन्द्र दास ने अवध में किसान आदोंलन का संचालन करते हुए श्मानसश का ही सहारा लिया। वे लोंगों को सचेत बनाने और भाोशक–वर्ग का चेहरा उजागर करने के लिए श्मानसश के ही दोहे चौपाइयों की नयी–नयी व्याख्याएं करते थे। 4

यद्यपि लगभग 300 सौ से अधिक संख्या में अनेकों रामकथा को लेकर भाोध अनुसंधान रचना के विविध आयामों में उपलब्ध है,। आगे बढ़कर देखे तो राम भी तुलसी के आराध्य नही 'राम का चरित्र' वह बह्रम है इस लिए वह रामचरित मानस है। तुलसी ने राम के माध्यम से मनुष्य के चरित्र में सदाचार मनुश्य में बह्रम स्थापित किया है। कारण कि तुलसी केवल कवि भक्त या साहित्यकार ही नहीं थे, साथ ही अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति के गहरे पारखी धर्म, नीति आदि पक्षों के सरोकारों से गहरा जुड़ाव रखने वाले समस्त लोक मंगल की भावना से ओत–प्रोत चेतस मानस थे। गाँधी भी केवल राजनीति व्यक्ति नहीं थे, राजनीति माध्यम थी सामाजिक सरोकारी की पूर्ती का। जीवन जगत के समस्त सामाजिक आर्थिक नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों को सहेजते हुए व्यश्टि से समश्टि की ओर चलने का मार्ग थी। यही वह आधारभूत समानता है जो आधुनिक युग के गाँधी को मध्यकाल थे तुलसी से प्राणवजु प्रदान करती है। जब तुलसी उद्घोश करते हैं–

त!ष जी पथी विरुन्ा क वि:ा विनय विवक
ए ा–ए प्कश्य प्श्य ०(न राम भरापा ,क

तो एक ओर मुक्तिबोध की पंक्तियों का स्मरण हो आता है ''आस्था कर्म को उत्सव कठिनाई को उल्लास बना देती है।'' तो गाँधी और तुलसी दोंनों राम के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अडिग आस्था भरोसा ले कर चलते है। उनके राम तो मर्यादा पुरुषोत्तम,जो प्रजा–वत्सल है, जो परहित सरिस धर्म नहीं, 'पर पीड़ा सम नही अधमाई में आस्था रखते हैं। तुलसी की रामकथा प्रजा के दु:ख को राजा का नरकवास का कारण मानती है। उनके राम 'कलिमलश का हरण करने वाले दुखी पीड़ित, पतित जनों का उद्धार करने वाले है, जो अन्याय, शोषण, अत्याचार करने वालों के प्रबल विरोधी है। ऐसे रामकथा की स्थापना करने वाले है जहाँ के समस्त स्त्री–पुरूश, वर्ण, वर्ग लिंगगत, सम्प्रदायगत विभेदों से मुक्त सुखी सम्पन्न स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हैं। तुलसी के जननायक राम ने मानव समाज को दैहिक दैविक भौतिक तापों से मुक्त करने में जिन कथा मूल्यों का सहारा लिया, गाँधी ने भी मानव समाज के संकटो से निपटने में उन्ही मूल्यों का वरण और संवर्द्धन किया और करने का आहवहन किया। जिसकी स्वीकरोक्ति स्वंय गाँधी जी का यह कथन, "भगवत गीता और तुलसीदास की रामायण से मुझे अपार भाक्ति मिलती है। दुनिया के अन्याय धर्मों के प्रति आदर भाव होते हुए भी मेरे हृदय पर उनका उतना असर नहीं होता जितना कि श्री कृष्ण की गीता और तुलसीदास की रामायण का होता है।''[5] तुलसी और गाँधी पृष्ठ सं. 282

मनुष्य रूप में राम जो भी कुछ लीला करते है चाहे वह राजा, पति, भाई योद्धा व भासक वह आदी संतुलन एवं मर्यादा के पर्याय है। यही कारण है कि जो आपका–हमारा जीवन है, जो आम सामान्य भारतीय समाज का जीवन है। वह अपने जीवन में हर कदम–कदम पर तुलसी को उद्धत करता है। उनसे ऊर्जा संतोश धीरज प्राप्त करता है तो कहीं उसका कारण यह भी है कि तुलसी को याद भी आते हैं तो– निस्सबल, असहाय, अभागे, गुणहीन, गरीब, दीन, अकुलीन पंगु अंधे निराधार। तो एक तरह से रामदीनबंधु है। जिसका उल्लेख वि वनाथ त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक लोकवादी तुलसी दास में यह पद लिया है–

''सुमिरू सनेह सों तू नाम राम राय को।
संबल निसंबलको, सखा असहाय को।।
भाग है अभागेह को, गुन गुनहीन को।
गाहक गरीब को, दयालु दानि दीन को।।
कुल अकुलीन को, सून्यो है बेद साखि है।
पाँगुरे को हाथ–पाँव आँधरे को आँखि है।।
पतित पावन राम–नाम से न दूसरो।
सुमिरि सुभुमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।''

वे आगे कहते हैं– तुलसी की कविताओं में भूख, महामारी, रोग, गरीबी, बेरोजगारी है, उसका कन्सर्न बार–बार आएगा। मुख महामारी और रोग इससे तुलसी के राम का प्रमुख प्रयोजन है। जो लोग हा ए पर है, वंचित, भोशित, दलित है, वे लोग तुलसी के राम के सरोकार हैं।''6

श्री नरेन्द्र का उपन्यास अभ्युदय के अध्ययन से रामकथा की गहनताओं में जाने का अवसर मिलता है समझ में आया कि राम, सीता, लक्ष्मण आदि भारतीस जनमानस में क्यों और कैसे प्रविश्ट हुए हैं। रामकथा के माध्यम से श्री नरेन्द्र कोहली पीड़ित जनता के अभ्युदय के लिए जन आंदोलन के पक्षधर के रूप में सामने आए। इच्छा हुई कि रामकथा को अधिक गहनता से जानना है और समझना है। परिणामतः वाल्मीकीय रामायण के राम को निकट से जानने का प्रयास किया। लेकिन वाल्मीकीय रामायण के राम को अधिक समझने के लिए नहीं थी, क्योंकि वाल्मीकीय रामायण के राम वही थे, जो जन मानस में स्थान पाए थे। समझ में आया कि राम वि वमित्र से जन कल्याण की मंत्रदीक्षा प्राप्त करके वन जाने के अवसर की प्रतीक्षा में थे और कैकेयी के दो वरों के माध्यम से उन्हें वन जाने और पीड़ित जनता का नेतृत्व करने का अवसर मिल रहा था। फिर तो संघर्श होना ही था और अंततः युद्ध हुआ। राक्षसी भाक्तियों का अंत होकर जनता का अभ्युदय हुआ।

इस सत्य को हम चाहे जिस रूप में स्वीकार करें कि रामकथा अपने रचनाधर्मिता के समस्त रूपों में मनुष्यता के सबसे निकटतम संघर्शों की न केवल अभिव्यक्ति है साथ ही कुमार वि वास जी के भाब्दों में कहें तो

मानवता की 'ा!षि आ'ा कप ए. ए!दर द्यरुन राम. जि. वा.ाि अथवती –ा ध्यी

ष्धी ज़ जरुन राम) माता–रिुता ध0 जन रुरिजन न अरुन–अरुन द'ा थ– दपनया

भरन द'ा

लगभग 6000 साल पहले जो कहानियाँ घटित हुई आज की दृश्टि से उनमे तथ्य नही कथ्य महत्व रखता है। सवाल यह है कि हम आज इस दे । में राम की पूजा क्यों

करते है? वे कोई बहुत सफल व्यक्ति नही थे, अगर इसे हम ध्यान से देखते हैं वे लगातार असफल रहे।

यहाँ तक कि वे आज से कुछ महीनों पहले तक जमीन की समस्याओं से जूझ रहे थे। मगर ये आज की बात नही वे अपने जीवन की शुरूआत से ही मुसीबत और मुसीबतों मे जूझते रहे। राजा बनना उनका अधिकार था। 17 या 18 वर्श की अवस्था में उनका राज्याभिशेक हो गया उसके कुछ समय के अदंर ही उन्हें जंगल भेजा दिया गया। ये उन्हे राज्य से, सत्ता से और हर चीज से बाहर फेकने जैसा था। इन्ही चीजों से कोई व्यक्ति टूट सकता था मगर वे वही बस गये । अब ये श्री लंका के लोग आकर उनकी पत्नी का अपहरण कर ले जाते है। अखिर वो एक राजा है, अगर कोई उनकी पत्नी को चूरा कर सुदूर दक्षिण की ओर लेकर चले जाते हैं, मगर वे उनकी खोज में जाते है जबकि वे एक राजा थे उनके पास विकल्प थे बहुत सारी स्थानीय स्त्रियां उनसे विवाह के लिए तैयार हो जाती, मगर वे उनकी खोज में जाते है। भारी–भरकम सेना के साथ नही बस वे और उनके भाई आम आदमी की तरह अगर एक व्यक्ति ये जाने बिना कि उसकी पत्नी कहाँ है वह जीवित भी है या नही उसके साथ क्या हुआ? मतलब वे उनके लिए बहुत मायने रखती हैं। वे वहाँ जाते हैं आमजन को लेकर सेना बनाते है फिर युद्ध होता है। वह सैकड़ो लोगो को मार देते हैं सुंदर भाहर को जला देते है। अपनी पत्नी को वापस लाते है और इससे पहले की वे सामान्य जीवन जीने लगे एक वर्श के लिए हिमालय में प्रायश्चित करने जाते हैं लक्ष्मण पूछतें हैं उस आदमी में ने आपकी पत्नी चुरा ली आप उसकी हत्या के लिए प्रयाश्चित करने जा रहें हैं? राम उत्तर देते हैं कि रावण के 10 मूल स्वभाव थे उनसे से 9 भयानक गुणों को मारने के लिए मुझे कोई पश्चाताप नही, मगर वे एक महान भक्त भी था और मैनें एक महान भक्त को मारा और इन्होंने एक साल का प्रयाश्चित भी किया।

उनकी पत्नी गर्भवती हैं। एक राजा की पत्नी का गर्भवती होने का मतलब केवल बच्चे की बात नहीं वह उसके साम्राज्य का वं जि इसमें और भी कई चीजे भामिल होती है। मगर एक बार फिर ऐसी राजनैतिक स्थिति पैदा हुई जहाँ उन्हें अपनी पत्नी को जंगल भेजना पड़ा जैसे आज हमारे दे । में बहुत तरह की चीजे हैं, हम जानना चाहते हैं कि क्या आप इस दे । के लिए ऐसा नेता चाहते है जो दे को अपने परिवार एवं नीजि प्रेम से ऊपर रखे या धृतराष्ट्र चाहते है कि किसी भी कीमत पर मेरा ही बेटा। आप एक ऐसे व्यक्ति को चाहते है जो अपने दे । के नागारिकों की अपने परिवार से ऊपर रखता है। ये सीता, राम के लिए सिर्फ एक स्त्री नही थी उन्होंने जाकर उनके लिए युद्धलड़ा वे सीता के लिए जी रहे थे मगर फिर भी गर्भावस्था में उन्हें फिर से जंगल भेज दिया यह जानते हुए कि यह उनके राज्य का भविश्य हो सकता है। वराल्मीकि रामायण का एक प्रसंग है जिसमें राम एक धोबी के ताना मारने पर सीता को जंगल भेज देते हैं। यह एक धोबी की बात नहीं आप इन चीजो का भाब्दिक अर्थ लेते हैं कि एक धोबी ने कहा यहां कहने का मतलब है कि आमलोग यह चीजें कह रहे थे अर्थात आम जनता कह रही थी कि वह ऐसी स्त्री को राजमाता के रूप में नहीं स्वीकार करना चाहत थी उस समय के लोग यही कह रहे थे। एक राजा के रूप में राम यह कह सकते थे कि मुझे इसी कोई परवाह नही कि आप क्या सोचते है मुझे अपनी पत्नी से प्रेम है और मैं उन्हें अपने साथ ही रखुंगा तो वे एक अच्छे राजा वे एक अच्छे प्र प्सक नही होते तो उन्होंने अपनी प्रजा को अपने प्रेम से ऊपर रखा।

जिस स्त्री को वे बहुत–बहुत प्रेम करते थे और वह गर्मवती भी थी यह उनके लिए कोई छोटी बात नही थी। मगर फिर भी उन्होनें उन्हें जंगल भेज दिया इसे नमन किया जाना चाहिए जबकी यह उनकी नीजि अपूरनीय छाति थी आज उनकी पूजा इसलिए की जाती है कि क्योकि हालाकि जीवन ने उनके सामने एक के बाद एक मु किलें रखी लेकिन इस आदमी ने कभी नाराजगी नही दिखायी, नफरत नही दिखायी, क्रोधित नही हुए वे वैरागी भी नही बन गये। उन्होंने अपना नीजि दुख तकलीफ अपने अंदर रखते हुए अपने समस्त कर्तव्यों का निर्वहन किया। वे उस दिन तक अपनी प्रजा के लिए सर्वोत्तम काम करते चले गये । आज भी वे इसलिए मर्यादापुरुषोत्तम के रूप में हमारे बीच जीवित और प्रांसगिक है।

जब कृश्ण की बात की जाती है तो उनके बारे में कई गलत फहमियाँ सामने आती है। जब हम कृश्ण कहते है तो ज्यादातर लोग मक्खन बासुरी लाड़कियों के बारे में सोचते है लेकिन हमें समझना चाहिए कि मक्खन में उनकी रूचि सिर्फ वाल्य काल्य तक ही थी और लड़कियों का साथ कि रावस्था तक ही था। 16 की उम्र में उनके गुरू संदीपनी के उनको जीवन का उदे य क्या है? की समझ दी तो सबसे पहले उन्होंने वृन्दावन छोड़ दिया दुबारा उनका वृन्दावन जाना कभी नही हुआ, ना ही अपने रि ते नातेदरों से मिलने न अपने बाल–सखाओं से मिलने वही सब कुछ समप्त हो गया । आज जब हम। राधे कृष्ण कहते है। तो राधा कृष्ण से पहले आती है। क्योंकि उनका प्रेम उनकी संवेदनात्मक समझ उनकी प्रेम लीला ने इस पूरे उप महादीप के सांकृति कल्पना में इस तरह जगह पायी है कि हम कृष्ण राधे नही राधे कृष्ण कहते हैं, किंतु 16 की उम्र में ही कृष्ण– राधा ने एक दूसरे को अंतिम बार फिर कभी नहीं देखा बाँसुरी भी कृश्ण 16 के बाद नहीं बजाई 16 से 21 की उम्र तक उन्होंने ब्रम्हचारी का जीवन जिया। जबरदस्त साधना की उसके बाद उनका पूरा जीवन समर्पित था राजनितिक प्रक्रिया और आध्यात्मिक प्रक्रिया का मिलन कराने के लिए लेकिन इसका अंत तबाही के साथ हुआ लेकिन उन्होंने हर संभव कार्य किया इन विशयों पर बात नहीं की जाती कि उन्होंने उत्तरी भारत के मैदानों में लगभग 1000 आश्रम बनवाया क्योंकि वे आध्यात्मिक प्रक्रिया को अलग विशय वस्तु नही बनाना चाहते थे जीवन का हिस्सा बनाना चाहते थे जैसे जीवन के बीच जीवन के लिए। बल्कि जीवन की मुख्यधारा में लाना चाहते थे वि श रूप से देशों के भासको के जीवन में उनका लक्ष्य था उस समय की राजनीतिक प्रक्रिया को आध्यात्मिक बनाना । साफ है कि उन दिनों की राजनीति लोकतांत्रिक नहीं थी। तो सोचा कि सकों तक आध्यात्मिकता पहुचे तो फायदा स्वभा रूप से जनमानस को मिलेगा जो लोग दूसरों के जीवन को संभालते हैं या प्रभावित करते है जैसे राजा या अन्य

प्र सनिक पदो पर बैठे लोग जो ऐसे हर विचार भावना पैदा करते हैं, काम जो आप करते है लाखों लोगों को प्रभावित करते है। जब आपके पास ऐसी जिम्मेदारी हो तो आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि आप एक अच्छी स्थिति में

हों, आप क्या सोचते है महसूस करते है, वह एक ऐसे भीतरी स्थान से आना चाहिए जो लोगों की खु हाली के लिए काम करे। अगर हम एक सीमित नजरिये से देखते हैं तो हर विचार जो मैं पैदा करता हूँ हर भावना जो हमारे अंदर पैदा होती है उसमें लोगों का जीवन बुरी तरह प्रभावित होगा, तो उन्होंने सिर्फ भासकों पर ध्यान दिया दुर्भाग्य से वे इसमें भी सफल नही हुए जिसका परिणाम हमें महाभारत के युद्ध में देखने को मिलता है। जिसमें एक पूरी पीढ़ी समाप्त हो गयी पर फिर भी हम उनकी पूजा करते हैं हर वो चीज जो वे रचना चाहते थे उसमें उन्हें सफलता नही मिली एक चीज जो वे हर हाल में रोकना चाहते थे वह था कुरूक्षेत्र का युद्ध लेकिन वह इतिहास का भयंकर युद्ध रहा और वे खुद एवं उनके परिजन इसमें लड़े और मारे गये, पर इन सबके बीच जो सबसे महत्वपूर्ण था वह था उनका आनंदित रहना इन सबके बीच होकर भी उससे अछूता रहना इसलिए हम उन्हें भगवान कहते हैं। एक भयंकर सच्चाई जो उनकी बीच ही घटित हो रही थी। एक भयंकर नाटक जो उनके आसपास हो रहा था और वो इससे अछूते रहे आप भी कर सकते हैं। क्या आप अपना जीवन जागरूक होकर चला सकते हैं? या जब जीवन आपको परे न करेगा तो आप अमानुश हो जायेगें, प हो जायेगें,? आप दुनिया का कौन सा मकाम हासिल करेगें यह कई सच्चाईयो पर निर्भर करता है। क्या आप एक सफल मनुष्य हैं यह एक सवाल अगर आप सफलता से संभाल पाते हैं।तो हम कह सकते हैं कि सही अर्थ में आपने राम कृश्ण को सूक्ष्म स्तर पर समझ पाये है। मैं अपनी वाणी को विराम डॉ. राम मनोहर लोहिया जी के इन्हीं भावों के साथ देना चाहूँगी

''ऐ भारत माता हमें वि का मस्तिष्क दो कृष्ण का हृदय दो तथा राम का कर्म और वचन दो । हमें असीम मस्तिष्क और उन्मुक्त हृदय के साथ – साथ जीवन की मर्यादा से रचों। ''

डॉ. राममनोहर लोहीया अपने प्रसिद्ध लेज
'राम कृष्ण और शिव में अगस्त 1955

संदर्भ

1.(महात्मा गाँधी मेरे सपनों का भारत, पृष्ठ सं. 324)
2. तुलसी और गाँधी– श्री भगवान सिंह पृश्ठ सं. 2016–17
सामायिक प्रका ननई दिल्ली
3. निबंधों की दुनिया–५ चन्द्रधर भामा गुलेरी, प्रधान संपादक डॉ. निर्मला जैन पृष्ठ सं. 59–61 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली. संस्करण – 2007
4.भक्ति आन्दोलन और काव्य– गोपे वर सिंह वाणी प्रका न पृश्ठ सं. 124
5. तुलसी और गाँधी पृष्ठ सं. 282
6. तुलसीदास–आज के आलोचकों की नजर में लक्ष्मण यादव पृष्ठ सं.45 स्वराज प्रका नि नई दिल्ली

RRIJM 2015, All Rights Reserved